



प्रधानमंत्री द्वारा राजस्थान में विभिन्न प्रमुख राजमार्ग परियोजनाओं के उद्घाटन और आधारशिला रखने के अवसर पर उनके भाषण का मूल पाठ

Posted On: 29 AUG 2017 7:35PM by PIB Delhi

आप सब इतनी विशाल संख्या में हम सबको आशीर्वाद देने के लिए आये हैं इसके लिए आप सबका हृदय से बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूँ। पिछले दिनों बाढ़ के कारण देश के कुछ भागों में काफी मुसीबत आई। कई लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी। किसानों को भी काफी नुकसान हुआ। राजस्थान में भी कई स्थानों पर ये संकट आया। राज्य सरकार ने अपना एक प्रतिवेदन भारत सरकार को भेजा है। भारत सरकार की तरफ से भी एक उच्चस्तरीय समिति राजस्थान का दौरा कर चुकी है। मैं राजस्थान के बाढ़ पीड़ित भाइयों-बहनों को, किसानों को विश्वास दिलाता हूँ कि संकट की घड़ी में भारत सरकार पूरी तरह आपके साथ खड़ी रहेगी और इस संकट से बाहर निकल कर एक नए विश्वास के साथ हम सब आगे बढ़ें, इसके लिए मिल जुल करके भरपूर प्रयास भी करेंगे। आज एक ही कार्यक्रम में पंद्रह हजार करोड़ रुपयों से ज्यादा लागत वाले विकास के कामों का शिलान्यास होना या लोकार्पण होना, ये अपने आप में राजस्थान के लिए एक ऐतिहासिक अद्भुत घटना है- योजनाओं की घोषणाएं करना। चुनाव के समय भांति-भांति के वादे करना, अखबारों में बहुत बड़ी-बड़ी हेडलाइन छप जाना। आप भी भले हम भी भले। माला दो तुमको डालु, माला दो तुमको डालु। ये सारे खेल देश भलीभांति देखता आया है सालो से यही चला आया है हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती यही है इन पुरानी बुराईयों को खतम करने में इतनी ताकत लगती है जिसकी आप कल्पना नहीं कर सकते ऐसे हालात छोड़ कर गए हैं। सारी व्यवस्था ऐसे चरमरा गई है बुराईयां इतनी प्रवेश कर चुकी है अगर कोई ढीला ढाला इंसान होता तो शायद उसको देखते ही डर जाता लेकिन हम जरा अलग मिट्टी के बने हुए हैं चुनौतियों को चुनने की भी आदत है और चुनौतियों को चुनौती देने की भी आदत है और चुनौतियों को स्वीकार करते हुए रास्ते खोजते हुए मंजिल की ओर देश को ले जाने के लिए जी जान से जुटने का माजा भी रखते हैं अभी नितिन जी वर्णन कर रहे थे चंबल के उस ब्रिज का 2006 से 2017 तक 11 साल और बजट कितना 300 करोड़ से भी कम। सरकार में फर्क क्या होता है? काम करने वाली सरकार किसको कहते हैं? यह समझने के लिए ये घटना काफी है। एक छोटा सा ब्रिज, 300 करोड़ रुपए की लागत का, ब्रिज साल- डेढ़ साल में बन जाये, सामान्य पद्धति से बनाये तो साल डेढ़ साल में बन जाये। 11 साल बीत गए और आज पांच हजार छह सौ करोड़ के वो प्रोजेक्ट। जरा पत्रकार मित्र हिसाब देखेंतोदिमाग में 300 करोड़ का प्रोजेक्ट 11 साल पांच हजार छह सौ करोड़ के काम। 2014 में दिल्ली में हमारी सरकार बनने के बाद विचार आया, योजना शुरू हुई, कार्यक्रम बना और आज तीन साल के भीतर-भीतर पांच हजार छह सौ करोड़ के कामों का लोकार्पण हो रहा है। हमने उस संस्कृति को लेने का प्रयास किया है जिस काम का हम आरम्भ करेंगे उसे पूरा करने का प्रयास भी हम ही करेंगे और जब कोई योजना विलम्बित हो जाती है एकाध चुनाव में राजनीतिक लाभ तो शायद मिल जाता होगा। पत्थर गाड़ दिया फूल माला पहन ली फोटो निकलवा दी अखबार में छप्पा दी एकाध बार चुनाव तो निकल जाएगा। लेकिन बाद में अगर वो योजना अटकी पड़ी है, हजारों करोड़ रुपयों की लागत बढ़ती जाती है। काम न होने के कारण जो नुकसान हुआ है, वो अलग। काम अटकने के कारण जो नुकसान हुआ है वो अलग। और देश का पूरा अर्थतंत्र एक गड्ढे में पड़ी हुई ये योजनाएं खा जाती हैं। ऐसे गड्ढे में पड़ी इतनी योजनाओं को मुझे बाहर निकालने में इतनी ताकत लग रही है जैसे किये ब्रिज आपने देखा बंद पड़ा था काम। कोर्ट कचहरी में उलझ रहा था। हिम्मत के साथ, ईमानदारी के साथ फैसले लेते हैं, निर्णय करते हैं तो परिणाम भी मिलता है। और आज वो परिणाम आपके सामने है, आने वाले दिनों में नौ हजार करोड़ से भी ज्यादा केनए काम अकेले राजस्थान में होंगे। इनमें प्रमुखतया रोड सेक्टर के काम हैं, कहीं रोड की चौड़ाई, कहीं नई पुलिया, कहीं नया रोड, कहीं रोड का आधुनिकीकरण। एक साथ नौ हजार करोड़ से ज्यादा रुपयों के काम को शुरू करना। अगर यही काम 500 करोड़ के आज करते, 500 करोड़ के पांच दिन बाद करते, फिर 500 करोड़ के एक महीने बाद करते, तो राजस्थान के अगले चुनाव तक हम राजनीति की रोटियां सेकते रहते। लेकिन वो रास्ता हमें मंजूर नहीं है। हमें काम करना है, समय सीमा में काम करना है और इसलिए एक साथ योजना बना करके, नौ हजार करोड़ रुपयों से ज्यादा लागत से नए कामों का आज शिलान्यास हो रहा है। और जब इतनी बड़ी जिम्मेदारी के साथ कार्यक्रमों की बात करते हैं, तो पूरा करने के संकल्प के साथ करते हैं। और मैं राजस्थान की धरती को विश्वास दिलाता हूँ कि ये करके रहेंगे और राजस्थान की काया पलट हो कर रहेगी। देश के विकास में इंफ्रास्ट्रक्चर का बहुत महत्व होता है। ये ज्यादा लागत वाले होते हैं, समय लम्बा लेने वाले काम होते हैं। राजनीतिक दृष्टि से लोगों का धैर्य खो भी जाता है और इसलिए सरकारें, राजनेता लम्बे समय की योजनाएं, लम्बे समय के बड़े काम, इनसे भागते रहते थे, पुराने ज़माने में। यह हम भली-भांति जानते हैं कि देश को अगर नई ऊँचाइयों पर ले जाना है, तो हमें हमारी व्यवस्थाओं को भी आधुनिक बनाना पड़ेगा। रेल हो, रोड हो, पानी की व्यवस्था हो, बिजली की व्यवस्था हो, ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क हो, वाटर वेज हो, कोस्टल कनेक्टिविटी का रास्ता हो, हर प्रकार से आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए अब विलम्ब करना भारत के लिए फायदेमंद नहीं होगा। और एक बार इस प्रकार की आधुनिक व्यवस्थाये विकसित होती हैं, तो सिर्फ जमीन पर एक बड़ी काली लम्बी लकीर दिखती है ऐसा नहीं है। वो लम्बी काली पट्टी जो रोड है, वो काले रंग वाला रोड आपके जीवन में रोशनी भरने का काम कर देता है। आप विचार कीजिए कि नौ हजार करोड़ रुपयों के लागत से बनने वाले रोड से किसान को कितना फायदा होगा। वे अपनी फसल, अपने फल फूल, सब्जी आसानी से ले जा सकेंगे-जब अटल बिहारी वाजपेई जी ने गोलडन चतुसक बनाया तो शुरू में लोगों को लगता था,वाह! क्या बढ़िया रोड बन गया! पहले ऐसा रोड नहीं था।आनंद आता था, गाड़ी तेज चलती थी। बात वहाँ नहीं हो सकती थी। मुझे बराबर याद है राजस्थान के इसी इलाके से सटा हुआ गुजरात का हिससा चाहे साबरकांठा हो, चाहे अहमदाबाद जिले के कुछ किसान वहाँ हो फल, फूल, सब्जी और दूध ये अच्छा रोड बनने के कारण, एक दिन में दिल्ली के बाजार में जा करके बिकते थे। और वहाँ गाँव के किसान की आय में आमूल-चूल परिवर्तन आया है। एक बार अच्छे रोड बन जाते हैं तो मेरा किसान जिसको अपनी फसल शहर तक ले जाने में दिक्कत होती है फल-फूल, सब्जी दूध दो- दो दिन अगर विलंब हो जाता है तो इनका 20 से 30 प्रतिशत तबाह हो जाता है। खरीददार लेने को तैयार नहीं होता है।जब अच्छे रोड का Network बनता है तो देश की Economy में भी गति आती है। दूर-सुदूर गाँव में बैठे किसानों को अपने पसंदीदा बाजार में पहुँचने के लिए एक अवसर मिलता है जब रोड बन जाते हैं Infrastructure बन जाता है। गाँव की गरीब माँ प्रसूता से पीड़ित है, दवाखाना दूर है, 25-30 किलोमीटर दूर जाना है, अगर अच्छे रोड हैं तो माँ और बच्चे की जिंदगी बच जाती है। लेकिन अगर रोड ठीक नहीं है तो उस माँ को जिंदगी से हाथ धो देना पड़ता है- रोड से ये काम होता है। राजस्थान में तो राजस्थान का रोड तो पैसे उगलने की ताकत रखता है-पैसे उगलने की। शायद हिंदुस्तान के और भागों को रोड से जितना फायदा मिलता है उससे पाँच गुना लाभ राजस्थान को मिलता है क्योंकि राजस्थान में दूरियाँ बहुत हैं। भू-भाग बहुत बड़ा है और राजस्थानके जीवन में Tourism की बहुत बड़ी ताकत है विश्व भर का Tourist राजस्थान से परिचित है। दुनिया भरके Tourist को पुष्कर के मेले में आने का मन करता है, दुनिया के Tourist को झील की नगरी उदयपुर में आकर समय बिताने का मन करता है। दुनिया भर के Tourist को जैसलमेर के पास मरुभूमि में जाकर के एक नई जिंदगी का एहसास करने का मन करता है। किसी को श्रीनाथ जाना है, किसी को एकलिंग जाना, अनगिनत जगहें हैं राजस्थान के हर कोने में Tourism को आकर्षित करने की- Inherent ताकत पड़ी है। एक ऐसी Magnetic Power है जो कि न सिर्फ हिन्दुस्तान के कोने-कोने में दुनिया भर से यात्रियों को खींचने की ताकत रखती है। और जब Tourist आता है न, वो जेब खाली करने के लिए आता है और यहाँ के लोगों का जेब भरने के लिए आता है। और Tourism एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें कम से कम पूंजी निवेश से ज्यादा ज्यादा से लोगों को रोजगार मिलता है।हर कोई कमाता है। फूल बेचने वाला कमाएगा, प्रसाद बेचने वाला कमाएगा, पूजा का सामान बेचने वाला कमाएगा, Auto Rikshaw वाला कमाएगा, Taxi वाला कमाएगा, गैस्ट हाउस वाला कमाएगा, Handicraft बेचने वाला कमाएगा, चाय बेचने वाला भी कमाएगा। ये ताकत जिस राज्य में है, लेकिन अगर ट्राफिक जाम रहता है, रास्ते टूटे फूटे हैं,गड्ढे से भरे हुए हैं कोई Proper signage नहीं है,कोई Parking की व्यवस्था नहीं है, सही से स्थान-स्थान पर पेट्रोल पंप की सुविधा नहीं है तो Tourist एकाध बार तो आएगा लेकिन जल्दी-जल्दी वापस जाने के लिए सोचता रहेगा। ये 15000 करोड़ रुपए के प्रोजेक्ट सिर्फ जमीन पर रास्ते नहीं बना रहे हैं। वो राजस्थान के भाग्य के रास्ते खोल रहे हैं। ये मैं साफ देख रहा हूँ और इसलिए ये जो Infrastructure Project पर बल दिया जा रहा है, भारत सरकार इसके पीछे पूरी तरह खर्च करने पर लगी हुई है। इसलिए कि हिन्दुस्तान में Infrastructure को एक आधुनिक स्थान पर ले जाना है। Optical Fibre Network-दूर-सुदूर गाँव के बच्चों को Quality Education कैसे मिले, दूर-सुदूर गरीब के बच्चे को भी जैसी शिक्षा उदयपुर के अच्छे से अच्छे स्कूल में मिलती हो, अजमेर के अच्छे से अच्छे स्कूल में मिलती हो वैसी ही शिक्षा दूर-सुदूर बॉसवाड़ा के जंगल में रहने वाले मेरे आदिवासी भाई को कैसे मिले। ये Digital Network के द्वारा,Optical Fibre Network के द्वारा,Long distance Education के द्वारा, नई पीढ़ी को नई शिक्षा के द्वारा, नई Technology के माध्यम से शिक्षा के द्वारा शिक्षा देने का एक बड़ा अभियान। और उसी के तहत लाखों किलोमीटर Optical Fibre Network लगाया जा रहा है। अब ये Optical Fibre Network लगता है तो करोड़ों रुपए की लागत लगती है, अरबों, खरबों की लागत लगती है। लेकिन वहाँ जहाँ से गुजरती है, किसी को दिखता नहीं है। लेकिन इसमें मेरा क्या? हमारे लिए क्या हो रहा है, ध्यान में ही नहीं आता है। लेकिन जब वह लग जाएगी, बच्चों की पढ़ाई का काम होता होगा, बीमार मरीजों को टेलिमेडिसिन से दवाइयाँ को अच्छी सुविधा प्राप्त हो जाएगी, उसके उपचार के रास्ते तय हो जाएंगे, गाँव के लोगों को भी शहर की सुविधाएं उपलब्ध हो जाएँगी। आप कल्पना कर सकते हैं कि हिन्दुस्तान के गाँव में कितना बड़ा परिवर्तन आएगा? हम उस Infrastructure को बल देते हुए काम को आगे बढ़ा रहे हैं।

अभी मुख्यमंत्री जी बता रही थीं उज्ज्वला योजना के बारे में। लाखों की तादाद में गरीब माँ-बहनों के पास आज गैस का चूल्हा पहुँच गया। एक माँ जब लकड़ी के चूल्हे से घुँप में खाना पकाती है तब 400 सिगरेट का घुँआ उसके शरीर में जाता है। उन माँ-बहनों के उन बच्चों की जो खेलते हैं, उनके स्वास्थ्य की नौन चिंता करेगा? और एक जमाना था गैस का सिलेंडर लेने के लिए कितने पापड़ बेलने पड़ते थे। कितनी कठिनाइयाँ थीं, कितने नेताओं से चिट्ठी चौपाई करनी पड़ती थी। ये ऐसी सरकार है जो गरीब के घर जा करके उसको गैस का चूल्हा देने का अभियान चला रही है और लाखों परिवारों को दे चुकी है।

पहले रोड बनते थे-उससे आज दोगुना रोड बन रहे हैं। पहले रेल बनती थी- उससे आज दोगुना रेल बन रही है। चाहे पानी पहुँचाना हो, चाहे Optical Fibre Network पहुँचाना है- हमने गति भी बढ़ा दी है, काम का स्केल बढ़ा दिया है, स्कोप भी बढ़ा दिया है और स्कील में भी हमने सुधार करके चीजों को आधुनिक बनाने में सफलता प्राप्त की है।

अभी जीएसटी आया-शुरू में लोगों को लग रहा था लेकिन दुनिया के लिए अजूबा है, सवा सौ करोड़ का इतना बड़ा देश- रातों रात एक व्यवस्था बदल जाए और देश के सवा सौ करोड़ नागरिक नई व्यवस्था से अपने आप को Adjust करेंगे। ये हिन्दुस्तान की ताकत का परिचय करवाता है-दोस्तों!हरकिसी को गर्व होगा कि मेरे देश के अन्दर गाँव में भी बैठे छोटे व्यापारी को भी Technology के द्वारा आधुनिक कैसे बनना उसके मन में एक इच्छा जगी है और मैं चाहूँगा, मैं राजस्थान के अफसरों से खास आग्रह करूँगा कि एक अभियान चलाइए। 15 दिन का-गाँव-गाँव हर व्यापारी छोटा हो तो भी 20 लाख की सीमा से नीचे हो तब भी, 10 लाख की सीमा से नीचे हो तब भी, उसको भी जीएसटी में जोड़िए ताकि इस जीएसटी का लाभ उस गरीब व्यापारी को भी मिले और छोटे व्यापारी को भी मिलना चाहिए। अगर वह जुड़ेगा नहीं तो गाड़ी कहीं अटक जाएगी, वहीं रुक जाएगी, नीचे तक लाभ पहुँचेगा नहीं, एक अभियान के स्वरूप में काम उठाना चाहिए। आप देखिए राजस्थान की आय में भी आप ने कल्पना नहीं की होगी कि इतना परिवर्तन आएगा, इतना बढ़ावा होगा और उसका परिणाम ये होगा कि राजस्थान के गिरबीं की भलाई के लिए अनेक नई योजनाएं सरकार अपने हाथ में ले सकती है। जीएसटी के कारण अकेले Transportation में, जो Department भी हमारे नितिन जी देखते हैं- पहले Driver घर से निकलता था अगर उसको समुद्री तट बंदर पर सामान पहुँचाना हो तो अगर हम किलोमीटर की गिनती करें, ट्रक के स्पीड की गिनती करें, तो तीन दिन में पहुँच सकता है। लेकिन पहले हर जगह पर घुँगी, हर प्रकार के घुँगी नाका। और नाकों पर क्या क्या होता था, वो सब जानते हैं कि दुनिया कैसी चलती थी। वो बेचारा पाँच दिन में पहुँचता था। दो दिन ट्रक एक सप्ताह में अगर दो दिन ट्रक पड़ी रहती है तो देश की Economy को 25 प्रतिशत से ज्यादा नुकसान होता है Transportation में ये जीएसटी के बाद सारे घुँगी नाके गए, ट्रक के Driver को खड़े रहना जो लाल पास, नीला पास का जो चक्कर था सब बंद हो गया। और वो पहले पाँच दिन लगते थे अब तीन दिन में पहुँच रहा है। दो दिन ज्यादा माल ढो करके आगे बढ़ रहा है। उसके कारण माल ढोने के खर्च कम हुए। Transport वालों की आय बढ़ी और मैं तो नितिन जी से कह रहा हूँ कि प्रतिदिन नए Transport के कानून भी बदलने चाहिए। आज हमारे देश में क्या है एक ट्रक के अंदर माल ले कर जाते,पूरा उसी के अंदर ढो कर ले जाते हैं। अब समय की माँग है-ट्रक और ट्राली। जैसे ट्रैक्टर में होता

है वो अलग कर दी जाए। ट्राली के अंदर सामान भरा हो,जयपुर में ट्राली छोड़ दो, ट्रक ले कर चले जाओ, दूसरी ट्राली लगा लो- आगे बढ़ जाओ। ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि ड्राइवर रात को अपने घर पहुँच सके। परिवार में बच्चों के साथ रह सके। मैं ऐसी ट्रांसपोर्ट की व्यवस्था में Transport Transformation लाने का हमारा काम है। और Transformation देश में लाना है तो Transport पद्धति से भी बहुत तेजी से लाया जा सकता है और एक व्यापक योजना के साथ विकास की नई ऊँचाइयों को पार करने की दिशा में हम चल रहे हैं।

मैं फिर एक बार स्वागत सम्मान के लिए, आपके प्यार के लिए, आपके आशीर्वाद के लिए, आपका हृदय से बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूँ।

बहुत-बहुत धन्यवाद!

अतुल तिवारी/शाहबाज हसीबी/बाल्मीकि महतो

(Release ID: 1501347) Visitor Counter : 14

